Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 3

आधुनिक भारत एवं विश्व का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग-3

आधुनिक भारत और विश्व का इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	**ब्रिटिश नीतियां और महत्वपूर्ण घटनाएं (18वीं शताब्दी के मध्य तक वर्तमान तक)** • आधुनिक भारत के इतिहास की समयरेखा • ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा: • भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियो की स्थापना • भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताए • बंगाल • प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.) • बक्सर का युद्ध (अक्टूबर 1764) • बंगाल में द्वैध शासन • भारत में ब्रिटिश अधिनियम • 1857 का विद्रोह	1
2.	**1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम-1858 • भारत परिषद अधिनियम 1861 • तीन दिल्ली दरबार • सिविल सेवा में परिवर्तन • सेना में परिवर्तन • रियासतों के साथ संबंध • श्रम कानून • भारत परिषद् अधिनियम 1892	18
3.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण: 1885-1905)** • देश का एकीकरण • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना • उदारवादी चरण (1885-1905)	23
4.	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग /चरमपंथी चरण (1905-1909)** • चरमपंथियों के उदय के कारण • बंगाल का विभाजन • विभाजन विरोधी आंदोलन • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों में जन भागीदारी • स्वदेशी आंदोलन का पतन • चरमपंथियों का विश्लेषण • नरमपंथियों और उग्रवादियों के बीच अंतर • ऑल इंडिया मुस्लिम लीग • कांग्रेस का सूरत विभाजन (1907) • 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार / 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम • उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास • विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां	30

	• होम रूल लीग आंदोलन • कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916) • मोंटेग्यू का अगस्त 1917 का वक्तव्य	
5.	**जन आंदोलन: गांधीवादी युग (1917-1925)** • गांधी का प्रारंभिक जीवन • महात्मा गांधी का भारत आगमन • मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और भारत सरकार अधिनियम, 1919 • रॉलेट एक्ट (1919) • खिलाफत आंदोलन	**46**
6.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925-1939)** • कांग्रेस-खिलाफत स्वराज्य पार्टी या स्वराज पार्टी • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान • साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (1927) • मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (1927) • नेहरू रिपोर्ट (1928) • कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1928) • 1929 के दौरान राजनीतिक गतिविधि • इरविन की घोषणा (31 अक्टूबर, 1929) • दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर 1929) • कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) • सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) • दांडी मार्च (12 मार्च -6 अप्रैल, 1930) • गांधी-इरविन समझौता (1931) • कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931) • गोलमेज सम्मेलन • सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से शुरू • सांप्रदायिक पुरस्कार • पूना पैक्ट • हरिजनों के लिए और अस्पृश्यता के खिलाफ गांधी का अभियान • गांधीजी और अम्बेडकर- वैचारिक समानताएं और मतभेद • भारत सरकार अधिनियम, 1935 • 1937 के प्रांतीय चुनाव • कांग्रेस के हरिपुरा और त्रिपुरी अधिवेशन • द्वितीय विश्व युद्ध (1939) • कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940) • सुभाष चंद्र बोस	**57**
7.	**स्वतंत्रता की ओर (1940-1947)** • मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (1940) • अगस्त प्रस्ताव (1940) • व्यक्तिगत सत्याग्रह (1941) • द क्रिप्स मिशन (1942) • भारत छोड़ो आंदोलन (1942) • 1943 का बंगाल अकाल • राजगोपालाचारी फॉर्मूला (1944) • देसाई-लियाकत समझौता (1945) • वेवेल योजना (1945) • सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) • भारतीय राष्ट्रीय सेना का उदय • आम चुनाव (1945-46) • 1945-46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये • कैबिनेट मिशन (1946)	**77**

	• भारत में साम्प्रदायिकता • भारत में सांप्रदायिकता के विकास के कारण • संविधान सभा का गठन (1946) • क्लेमेंट एटली की घोषणा • माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) • भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम	
8.	**सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन (19वीं सदी)** • कारण • प्रमुख समाज सुधारक और उनसे सम्बंधित आन्दोलन • हिंदू सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आन्दोलन • पारसी सुधार आंदोलन • सिख सुधार आंदोलन • सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव	**95**
9.	**स्वातंत्र्योत्तर सुदृढ़ीकरण और पुनर्गठन** • स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत • सीमा आयोग • संसाधनों का विभाजन • रियासतों का एकीकरण • इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन • विलय प्रक्रिया • हैदराबाद • जूनागढ़ • कश्मीर • कांग्रेस ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया? • राज्यों का पुनर्गठन • भाषाई राज्यों के लिए आंदोलन • आजादी से पहले • आजादी के बाद • भाषाई प्रांत आयोग (या धर आयोग) • जेवीपी समिति • पहला भाषाई राज्य: आंध्र • राज्य पुनर्गठन आयोग (एसआरसी) या फजल अली आयोग • राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 • 1956 के बाद बने नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश • बॉम्बे राज्य का विभाजन: (महाराष्ट्र और गुजरात) • फ्रांस और पुर्तगाली से क्षेत्र • दादरा और नगर हवेली • गोवा, दमन और दीव • पुदुचेरी • नागालैंड का गठन • शाह आयोग और हरियाणा, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश का गठन • मणिपुर, त्रिपुरा और मेघालय • सिक्किम • मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और गोवा • छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड • तेलंगाना	**113**

10.	**नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास**
	• परमाणु ऊर्जा समृद्धि हेतु कार्यक्रम
	  ○ परमाणु ऊर्जा आयोग
	  ○ परमाणु विभाग
		124

	○ रिएक्टर अप्सरा • भारत अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में • स्थापित किये गए विभिन्न शोध संस्थान व उपक्रम ○ केन्द्रीय ग्लास एवं सेरेमिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ○ नेशनल मेटलर्जीकल लेबोरेट्री, जमशेदपुर ○ नेशनल फिजिकल लेबोरेट्री, दिल्ली ○ केन्द्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई ○ नेशनल केमिकल लेबोरेट्री, दिल्ली ○ केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मैसूर ○ सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट, लखनऊ ○ सेन्ट्रल इलेक्ट्रोकेमिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट, कराईकुडी ○ नेशनल फर्टिलाइजर लिमिटेड, नांगल ○ भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, बेंगलुरु ○ भिलाई इस्पात कारखाना ○ ओ.एन.जी.सी. ○ भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड ○ हिन्दुस्तान टेलिप्रिंटर लिमिटेड, चेन्नई	
11.	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • भारत में शिक्षा का विकास • 1857 से पहले की शिक्षा ○ 1813 का चार्टर अधिनियम ○ मैकाले का विवरण-पत्र, 1835 ○ वुड्स डिस्पैच ऑन एजुकेशन (1854) • 1857 के बाद की शिक्षा ○ हंटर कमीशन (1882-83) ○ भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 या रैले आयोग ○ सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-19) ○ हार्टोग समिति (1929) ○ बुनियादी शिक्षा की वर्धा योजना (1937) ○ शिक्षा की सार्जेंट योजना (1944) • स्थानीय शिक्षा का विकास • तकनीकी शिक्षा का विकास • शिक्षा में यूरोपीय लोगों का योगदान • शिक्षा में स्वदेशी प्रयास • शिक्षा पर ब्रिटिश नीति का मूल्यांकन ○ आधुनिक शिक्षा का नकारात्मक प्रभाव ○ आधुनिक शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव • प्रेस का विकास ○ प्रेस की सेंसरशिप अधिनियम, 1799 ○ 1823 के लाइसेंस विनियम ○ 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम ○ 1867 का पंजीकरण अधिनियम ○ 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट ○ समाचार पत्र (अपराधों के लिए उकसाना) अधिनियम, 1908 ○ भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931 ○ भारतीय राज्य (संरक्षण) अधिनियम, 1934 • राष्ट्रवादी और साहित्यिक विकास ○ भारतीय प्रेस का योगदान	**127**

विश्व का इतिहास

12.	**पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार**
	• पुनर्जागरण
	  ○ अर्थ
	• पुनर्जागरण के उदय के कारक
	  ○ सामंतवाद का पतन
	  ○ धर्मयुद्ध का प्रभाव
	  ○ चर्च के प्रभाव में कमी
	  ○ प्रगतिशील शासकों और कुलीनों का योगदान
	  ○ भौगोलिक खोज
	  ○ आर्थिक समृद्धि
	  ○ प्रिंटिंग प्रेस का अविष्कार
	  ○ क़ुस्तुंतुनिया का पतन
	• पुनर्जागरण के जन्मस्थान: इटली
	• पुनर्जागरण की विशेषताएं
	• प्रभाव
	  ○ साहित्य
	  ○ कला
	  ○ स्थापत्य
	  ○ मूर्तिकला
	  ○ चित्रकला
	  ○ ललित कला
	  ○ विज्ञान
	• पुनर्जागरण का महत्व
	• सामंतवाद
	  ○ सामंतवाद की प्रमुख विशेषताएँ
	  ○ सामंती समाज: सामाजिक संरचना
	  ○ योद्धा (नाइट)
	  ○ सामंती लॉर्ड के अधिकार और कर्तव्य
	  ○ मातहत (वसाल) का कर्तव्य
	  ○ सामंतवाद का पतन
	• धर्म सुधार आन्दोलन
	  ○ आंदोलन के निर्माणकारी तथ्य
	  ○ प्रोटेस्टेंट आन्दोलन
	• कैथोलिक धर्म सुधार आन्दोलन
	• अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और उपनिवेशवाद की शुरुआत
	• पूर्ण राजशाही का उदय
	• 95 थीसिस
		139

13.	**प्रबोधन और औद्योगिक क्रांति**
	• प्रबोधन के उदय के कारण
	• प्रबोधन के लक्षण
	  ○ कारण/तर्कवाद
	  ○ प्राकृतिक कानून / प्रकृतिवाद
	  ○ मानवतावाद
	  ○ व्यक्तिवाद
	  ○ सापेक्षवाद
		149

	• विचारकों और दार्शनिकों द्वारा निभाई गई भूमिका
	  o जीन-जैक्स रूसो (1712-1778)
	  o इमेनुअल कांट (1724-1804)
	• ज्ञानोदय और पुनर्जागरण
	  o समानता
	  o अंतर
	• प्रभाव
	• प्रबोधन के युग का अंत
	• औद्योगिक क्रान्ति
	  o पूर्व-औद्योगिक यूरोप की मुख्य विशेषताएं
	  o औद्योगिक क्रांति का उदय
	  o औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में क्यों हुई?
	• तकनीकी परिवर्तन
	  o कपड़ा उद्योग में नई प्रौद्योगिकियां
	  o परिवहन में नवाचार
	  o संचार और बैंकिंग
	  o कृषि क्रान्ति
	• औद्योगिक क्रांति का प्रभाव
	  o आर्थिक प्रभाव
	  o सामाजिक प्रभाव
	  o राजनीतिक प्रभाव
	  o पर्यावरणीय प्रभाव
	• जर्मनी में औद्योगिक क्रांति
	  o जर्मनी में औद्योगीकरण के कारण
	• संयुक्त राज्य अमेरिका में औद्योगिक क्रांति
	• जापान में औद्योगिक क्रांति
	  o जापानी औद्योगिक क्रांति की मुख्य विशेषताएं
	  o जापान में औद्योगिक क्रांति का प्रभाव
	• रूस में औद्योगिक क्रांति
	  o 19वीं सदी के अंत में रूस
	  o ज़ार अलेक्जेंडर II और सर्गेई विट्टे के सुधार
	  o औद्योगिक क्रांति के लाभ	

14.	**एशिया और अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद**
	• उपनिवेशवाद
	  o उपनिवेशवाद के चरण
	  o विभिन्न क्षेत्रों में उपनिवेशवाद
	  o उपनिवेशवाद की प्रमुख विशेषताएं
	• साम्राज्यवाद
	  o साम्राज्यवाद का उदय
	  o साम्राज्यवाद के उद्देश्य
	  o साम्राज्यवाद की विधियां
	  o साम्राज्यवाद का प्रभाव
	• नव साम्राज्यवाद
	• अमेरिका और प्रशांत देशों में साम्राज्यवाद
		164

15.	**विश्व युद्धों का प्रभाव**
	• प्रथम विश्व युद्ध)1914-1918)
	  o पृष्ठभूमि
	  o प्रथम विश्व युद्ध के कारण
		171

- युद्ध की प्रगति
  - दो विरोधी गठबंधन उभरे
  - पेरिस शांति सम्मेलन, 1919
  - वर्साय की संधि
  - अन्य संधियाँ
- प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम
  - राजनीतिक परिणाम
  - आर्थिक परिणाम
  - सामाजिक परिणाम
- राष्ट्र संघ
  - राष्ट्र संघ के प्रमुख अंग
- दो विश्व युद्धों के बीच का काल
  - युद्ध की अवधि में विश्व अर्थव्यवस्था: समृद्धि और अवसाद
  - रोअरिंग ट्वेंटीज़
  - आर्थिक विकास तीन कारकों पर आधारित था
  - मंदी का प्रभाव
- सर्वसत्तावादी शासन: फासीवाद और नाज़ीवाद
  - फासीवाद की विशेषताएं
  - इटली में फासीवाद के उदय के कारण
  - फासीवाद और नाजीवाद के बीच समानता
  - फासीवाद और नाज़ीवाद के बीच अंतर
- द्वितीय विश्व युद्ध
- द्वितीय विश्व युद्ध के कारण
  - वर्साय की संधि
  - आर्थिक मंदी
  - तुष्टिकरण की विफलता
  - राष्ट्र संघ की विफलता
  - 1931 में जापान का सैन्यवाद
  - नाज़ीवाद का उदय
  - फासीवाद का उदय
  - अल्पसंख्यक हितों की उपेक्षा
  - चेकोस्लोवाकिया पर जर्मनी का हमला
  - तात्कालिक कारण
- घटनाओं का क्रम
  - शुरुआत
  - फोनी युद्ध
  - रिबेंट्रोप पैक्ट
  - शीतकालीन युद्ध 1940
  - फ्रांस का पतन 1940
  - ब्रिटेन की लड़ाई 1940
  - युद्ध का वैश्विकरण
  - ऑपरेशन बारब्रोसा
  - पर्ल हार्बर
  - जर्मन विजय का उत्क्रमण
  - परमाणु बमबारी और अंत
- जर्मनी युद्ध क्यों हार गया
- युद्ध के परिणाम
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद

	○ नई महाशक्तियां ○ उपनिवेषवाद के अंत की शुरुआत ○ यूएन का जन्म ○ शीत युद्ध की शुरुआत ○ नई आर्थिक विश्व व्यवस्था	
16.	**अमरीकी क्रांति** • विभिन्न घटनाओं की एक श्रृंखला ने अमेरिकी क्रांति का नेतृत्व किया ○ उपनिवेशों में राजनीतिक संरचना ○ सप्तवर्षीय युद्ध • प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस (द कॉन्टिनेंटल कांग्रेस) • द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस • अमेरिकी विजय के कारण • अमेरिकी क्रांति का प्रभाव • राजनीतिक प्रभाव • सामाजिक प्रभाव ○ विश्व के अन्य भागों पर प्रभाव • अमेरिकी गृहयुद्ध (1861-1865) ○ गृहयुद्ध के कारण ○ अमेरिकी गृहयुद्ध का क्रम ○ अमेरिकी गृहयुद्ध का महत्व ○ अब्राहम लिंकन की भूमिका	**191**
17.	**फ्रांसीसी क्रांति** • पृष्ठभूमि • फ्रांसीसी क्रांति के कारण ○ राजनीतिक कारक ○ सामाजिक परिस्थिति ○ दार्शनिकों और विचारकों का प्रभाव ○ तत्काल कारक • फ्रांसीसी क्रांति के चरण ○ चरण 1: 1789 की क्रांति (1789-1792) ○ चरण 2: फ्रांसीसी क्रांति का प्रारम्भ ○ चरण 3: अधिकारों की घोषणा ○ चरण 4: आतंक का शासन ○ चरण 5 - फ्रांसीसी क्रांति का अंत • फ्रांसीसी क्रांति में महिलाओं की भूमिका • फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव ○ सकारात्मक प्रभाव ○ नकारात्मक प्रभाव ○ विश्व पर फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव • नेपोलियन का युग ○ नेपोलियन का उदय ○ नेपोलियन बोनापार्ट का शासनकाल ○ नेपोलियन के सुधार ○ नेपोलियन सुधारों की कमियां ○ नेपोलियन की विदेश नीति ○ नेपोलियन के खिलाफ द्वितीय गुट (1799-1801) ○ तृतीय गुट और नेपोलियन: 1805-1807 ○ रूस के साथ युद्ध	**198**

	○ स्पेन के साथ युद्ध ○ ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध ○ रूस के खिलाफ युद्ध (1812) ○ प्रशिया के साथ युद्ध ○ नेपोलियन के खिलाफ चतुर्थ गुट • वियना की कांग्रेस (सितंबर 1814-जून 1815) • नेपोलियन का पतन ○ नेपोलियन के शासन का मूल्यांकन	

2 अध्याय

1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तनप्रशासन

भारत सरकार अधिनियम-1858

- इस एक्ट का अन्य नाम -**एक्ट फॉर बेटर गवर्मेंट ऑफ़ इंडिया**
- 1 नवंबर 1858 में इस एक्ट को लागू कर दिया गया
- इस अधिनियम के द्वारा **भारत का शासन ईस्ट** इंडिया कम्पनी के हाथों से लेकर **ब्रिटिश ताज** को हस्तांतरित कर दिया गया।
- एक नए पद **भारत-सचिव (Secretary of state for India)** का सृजन किया गया।
  - **भारत का सचिव** ब्रिटिश **संसद** और **ब्रिटिश मंत्रिमंडल** का सदस्य होना अनिवार्य था।
  - भारत में शासन चलने की जिम्मेदारी भारत सचिव के हाथो में थी जो सीधे **ब्रिटिश संसद** के प्रति जिम्मेदार था और **गवर्नर जनरल**(वायसराय)अब उसके **एजेंट** के रूप में कार्य करता था
  - **भारत-सचिव** की सहायता के लिए **15 सदस्यों** की एक **सभा** की स्थापना की गयी, जिसको **भारत-परिषद्** (India Council) कहा गया।
  - भारत-परिषद् के कुल 15 सदस्यों में से 8 सदस्यों की नियुक्ति का अधिकार **ब्रिटिश ताज** को तथा शेष बचे 7 सदस्यों की नियुक्ति अधिकार कम्पनी के **डायरेक्टरों** को दिया गया।
- निदेशक मंडल/ या **कोर्ट ऑफ़ डायरेक्टर** (Court of Directors) और **नियंत्रक मंडल** या **बोर्ड ऑफ़ कण्ट्रोल** (Board of Control) को **समाप्त कर दिया गया** तथा **निदेशक मंडल** और **नियंत्रक मंडल** के सभी अधिकार भारत-सचिव (Secretary of state for India) को प्रदान कर दिए गए।
- **भारत-सचिव** और **भारत-परिषद्** (India Council) के शासन को सम्मिलित रूप से **गृह सरकार (Home Government) का नाम दिया गया।**
- भारत-सचिव और भारत-परिषद् (India Council) के सदस्यों के **वेतन** और अन्य खर्चे **भारतीय राजस्व** से दिए जाने का प्रावधान किया गया।
- **भारत-परिषद्** का अध्यक्ष **भारत-सचिव** को बनाया गया।
- भारत-सचिव को अपने कार्यो की **वार्षिक रिपोर्ट** ब्रिटिश **संसद** को प्रस्तुत करना अनिवार्य था।
- भारत के गवर्नर जनरल का **पदनाम** बदल दिया गया और उसे **भारत का वायसराय** कहा जाने लगा
  - भारत में **गवर्नर-जनरल (वायसराय) ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि के** रूप में कार्य करने लगा।
  - **वायसराय** भारत सचिव की आज्ञा के अनुसार कार्य करने के लिए **बाध्य** था।
  - भारत के वायसराय की **नियुक्ति** ब्रिटेन की **महारानी** द्वारा की जाती थी।
  - **अध्यादेश** जारी करने का अधिकार **वायसराय** को दिया गया।
- भारत के गवर्नर जनरल की परिषद के **विधिक सदस्य** तथा **अधिवक्ता जनरल** (Advocate General) की नियुक्ति का अधिकार **ब्रिटेन के सम्राट** को दिया गया।
- **मुग़ल शासक** का पद **समाप्त** कर दिया गया।
- महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणाउर्फ "**भारत के लोगों का मैग्नाकार्टा**"।
  - 1 नवंबर, 1858 को **इलाहाबाद** में एक **भव्य दरबार** का आयोजन किया गया।
  - रानी ने **कैसर-ए-हिंदू** की उपाधि धारण की थी
  - भारत में ब्रिटिश शासन की **भावी नीति** की घोषणा की।

- ब्रिटिश प्रजा की हत्या करने वालों को छोड़कर सभी को **क्षमादान** दिया।
- 8 जुलाई, 1859 को पूरे भारत में **शांति** की घोषणा की गई।
- भारतीय सिपाहियों को ब्रिटिश सेना में **नियमित सेवा** में शामिल किया गया था

भारत परिषद अधिनियम 1861

- 1861 के बाद अधिनियम के साथ **'सहयोग की नीति'** का आरंभ हुआ.
- इस अधिनियम के द्वारा **कानून** बनने की प्रकिया में **भारतीय प्रतिनिधियों** को शामिल किया गया
- वायसराय की परिषद् में **पांचवा सदस्य विधिवेत्ता** के रूप में जोड़ा गया
- वायसराय की **परिषद्** में विस्तार किया गया और **कानून निर्माण** के लिए **अतिरिक्त सदस्यों** को जोड़ा गया।
  - जिनकी **न्यूनतम संख्या 6** और **अधिकतम संख्या 12** हो सकती है
  - इस प्रकार वायसराय की परिषद् में **कुल सदस्यों** की संख्या बढ़कर **17** हो गयी
- नामांकित सदस्यों में से आधे सदस्यों का **गैर सरकारी** होना अनिवार्य था
  - **वायसराय** कुछ भारतीयों को **गैर सरकारी** सदस्यों के रूप में नामांकित कर सकता था
  - **लार्ड केनिंग** ने 1862 में **तीन भारतीय** -**बनारस के राजा** ,**पटियाला के राजा** ,और **सर दिनकर राव** को विधान परिषद् में मनोनीत किया
- इस अधिनियम के अनुसार **बंगाल** में 1862 में ,**उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त** में 1866 में और **पंजाब** में 1867 में **विधान परिषद्** का गठन हुआ
- वायसराय को आपात काल में बिना **कौंसिल** की अनुमति के अध्यादेश जारी करने की अनुमति प्राप्त हुई (**अध्यादेश** की **अवधि** - **6 माह**)
- इस अधिनियम के द्वारा **पोर्ट फोलियो** या **विभागीकरण** प्रणाली की शुरुवात होती है इसके अंतर्गत वायसराय की परिषद में कोई सदस्य **एक या एक से अधिक विभाग** का **प्रभारी** बनाया जा सकता है
- इसके अतिरिक्त विधायी क्षेत्र में **विकेन्द्रीकरण** की नीति शुरू हुई **बम्बई** तथा **मद्रास** के प्रांतों को विधि निर्माण की शक्ति दी गई।

तीन दिल्ली दरबार

- 1877, 1903 और 1911 में **कोरोनेशन पार्क**, **दिल्ली**, भारत में अंग्रेजों द्वारा आयोजित भारतीय शाही शैली की सामूहिक सभा
- **उद्देश्य**: भारत के एक **सम्राट** या **महारानी के उत्तराधिकार** को चिह्नित करना।

1877 का दरबार	• इसे **उद्घोषणा दरबार** कहा जाता है। • यह एक **आधिकारिक कार्यक्रम** था और इसमें **आम जन** की कोई भागीदारी नही थी • इसमें **लिटन**(भारत के वायसराय), **महाराजाओं**, **नवाबों** और **बुद्धिजीवियों** ने भाग लिया। • लॉर्ड लिटन द्वारा **रामनाथ टैगोर** को **मानद राजा** का दर्जा दिया गया था। • दरबार में **गणेश वासुदेव जोशी पूना सार्वजनिक सभा** की ओर से एक **प्रशस्ति पत्र** पढ़ने के लिए उठे।
1903 का दरबार	• भारत के सम्राट और महारानी के रूप में **एडवर्ड सप्तम** और **डेनमार्क की एलेक्जेंड्रा** के उत्तराधिकार का जश्न मनाने के लिए आयोजित किया गया। • एक बड़ा **टेलीग्राफ** कार्यालय स्थापित किया गया था।
1911 का दरबार	• **किंग जॉर्ज पंचम** के उत्तराधिकार को चिह्नित किया। • **सम्राट ने स्वयं भाग लिया।** • शाही राजधानी को **कलकत्ता** से **दिल्ली** स्थानांतरित करने की घोषणा की गई।

	• **बंगाल के विभाजन** की घोषणा की घोषणा भी की गई थी

सिविल सेवा में परिवर्तन

- सभी श्रेष्ठ पद **यूरोपीय लोगों** के लिए आरक्षित थे। भारतीयों को **अधीनस्थ पद** ही मिले।
- भारतीय सिविल सेवा के अधिकारियों का चयन एक **प्रतियोगी परीक्षा** के माध्यम से किया गया था।
- सेवाओं में कोई महत्वपूर्ण **भारतीय** नहींथा
- **लैटिन**, **ग्रीक** और **अंग्रेजी** के ज्ञान पर आधारित परीक्षा **लंदन** में आयोजित की जाती थी
- अधिकतम आयु को धीरे-धीरे **1859** में **23** से घटाकर **1878** में **19 वर्ष** कर दिया गया।
- सिविल सेवा के अलावा **पुलिस**, **लोक निर्माण विभाग**, **वन**, **डाक** और **टेलीग्राफ** और **स्वास्थ्य सेवाओं** में सभी वरिष्ठ पद यूरोपीय लोगों के लिए आरक्षित थे।

सेना में परिवर्तन

- सेना में **यूरोपीय लोगों** का अनुपात बढ़ा दिया गया।
  - **बंगाल**: 1:2 और **मद्रास** और **बॉम्बे**: 2:5 के अनुपात में ।
- **मार्शल** और **गैर-मार्शल** जातियों को चिन्हित किया गया।
  - **बिहार**, **अवध**, **बंगाल** और **दक्षिण** के सैनिकों ने 1857 के विद्रोह में भाग लिया → गैर-मार्शल।
  - **सिख, गोरखा** और **पठान** सैनिक → अंग्रेजों का समर्थन → मार्शल।
- अलग-अलग कंपनियों में अलग-अलग जाति या जाति के सैनिक।
- सैनिकों के बीच **सांप्रदायिक**, **जाति**, **आदिवासी** और **क्षेत्रीय** वफादारी को प्रोत्साहित किया गया।
- **भारत के बाहर** अंग्रेजों के युद्धों में भारतीय सैनिकों का प्रयोग किया जाता था।

रियासतों के साथ संबंध

- 1857 के विद्रोह भारतीय राज्यों के विलय की नीति को छोड़ दिया गया और ब्रिटिश साम्राज्यवाद को मजबूत करने में उनका **सहयोग** मांगा गया।
- उन्हें कई **शक्तियां** बहाल कर दी गईं।
- राज्यों पर भी **कड़ी निगरानी** रखी गई।
- अंग्रेजों ने निवासियों के माध्यम से राज्यों के दिन-प्रतिदिन के **कामकाज** में **हस्तक्षेप** किया।
- लगभग सभी राज्यों में **ब्रिटिश निवासी** और **मनोनीत मंत्री** पदस्थापित थे।
- **उत्तराधिकारियों** को मान्यता देने का अधिकार **ब्रिटिश सरकार** के पास सुरक्षित था।
- इसी तरह 1873 में **बड़ौदा** और 1891 में **मणिपुर** के शासकों को हटा दिया गया।

श्रम कानून

कारण

- बढ़ते बागानों और कारखानों के साथ, श्रमिकों या **मजदूरों की संख्या बढ़** रही थी।
- **अस्वच्छ** और **खराब** कामकाजी **परिस्थितियों** में लंबे समय तक काम करना।।
- मजदूरों को राहत देने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया
- 1881 और 1891 में पारित कारखाना अधिनियम **बाल श्रम** और **महिलाओं** से संबंधित था, पर ये कारगर नही रहा ।
- वृक्षारोपण के लिए सभी कानून **बागान मालिकों** (मुख्य रूप से **यूरोपीय**) के अनुकूल थे।

भारतीय कारखाना अधिनियम, 1881

- लॉर्ड रिपन के समय में पहला **कारखाना अधिनियम 1881** में अपनाया गया था।
- 1885 में एक **कारखाना आयोग** नियुक्त किया गया था।
- **विशेषताएं**:
  - केवल **यांत्रिक शक्तियों** का उपयोग करने वाले कारखानों पर लागू, जिसमें **100 से अधिक** कर्मचारी नहीं होते हैं।
  - **7 साल से कम** उम्र के बच्चों के **रोजगार पर प्रतिबंध** लगा दिया।
  - **7-12 आयु वर्ग** के बच्चों को **अधिकतम 9 घंटे** काम करना था।
  - हादसों से बचने के लिए **खतरनाक मशीनों की बाड़** लगानी चाहिए।
  - कार्य अवधि के दौरान **एक घंटे** के **आराम** का प्रावधान।
  - श्रमिकों के लिए महीने में **चार दिन की छुट्टी** अनिवार्य कर दी गई थी।
  - इस अधिनियम के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए **निरीक्षकों** की नियुक्ति की जाती है।

भारतीय कारखाना अधिनियम, 1891

- 1892 में श्रम पर एक **शाही आयोग** नियुक्त किया गया था।
- **विशेषताएं**:
  - न्यूनतम आयु **7 वर्ष** से बढ़ाकर **9 वर्ष** की गई।
  - 9 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के लिए, दिन की कार्य सीमा = **8 घंटे** और रात में कोई काम नहीं।
  - **महिलाओं** के लिए **रात्रि** रोजगार निषिद्ध था; 2 घंटे आराम के साथ 11 घंटे काम।
  - सभी श्रमिकों के लिए **मध्याह्न भोजन** के लिए **विश्राम** और **प्रति सप्ताह** एक दिन का **अवकाश** निर्धारित किया गया था।
  - 50 से अधिक व्यक्तियों को नियोजित नही करने वाले सभी कारखानों पर लागू ।

भारत परिषद् अधिनियम 1892

कारण

- 1855 में कांग्रेस की स्थापन के बाद **राष्ट्रीय** चेतना का विकास होने लगा
- **केंद्रीय** और **प्रांतीय सरकारों** में भारतीयों की मांग तेजी से बढ़ने लगी
- एक नए शिक्षित भारतीय **मध्य वर्ग** का उदय

प्रमुख प्रावधान

- इस अधिनियम में भारतीयों को **बजट पर बहस** करने की अनुमति प्राप्त हुई लेकिन उन्हें **अनुपूरक प्रश्न** पूछने की अनुमति नहीं थी
- केंद्रीय विधान परिषद् में **अतिरिक्त सदस्यों** की संख्या न्यूनतम 10 और अधिकतम 16 कर दी
- प्रांतीय परिषद् में अतिरिक्त सदस्यों की संख्या में बृद्धि की गयी
- इस अधिनियम के अनुसार **वायसराय** को **केंद्रीय विधान परिषद्** और **गवर्नरों** को **प्रांतीय विधान परिषदों** में गैर सरकारी सदस्यों के सम्बन्ध में विशेष अधिकार दिए गए
- इसमें केन्द्रीयत विधान परिषद् और **बंगाल चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स** में गैर सरकारी सदस्यों के नामांकन के लिए वायसराय को और अधिकार दिए गए

- **प्रांतीय विधान परिषद्** में गवर्नर को जिला परिषद् ,नगरपालिका ,विश्व विद्यालय ,व्यापार, संघ, जमींदार,आदि की सिफारिशों के आधार पर गैर सरकारी सदस्यों को नामांकित कर सकता है
- इस अधिनियम में केन्द्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में **गैर सरकारी सदस्यों** की नियुक्ति के लिए अप्रत्यक्ष रूप से चुनाव का प्रावधान किया गया .
- इस प्रकार इस अधिनियम में पहली बार **चुनाव** की अवधारणा सामने आयी।

3 अध्याय राष्ट्रवाद का जन्म (1885-1905)

- **भारतीय राष्ट्रवाद** विदेशी प्रभुत्व के परिणामस्वरूप विकसित हुआ जिसने **भारतीय समाज** के विभिन्न वर्गों और जातियों के लोगों को **एकजुट** किया।
- भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में योगदान देने वाले कारक-
  - अंग्रेजों के वास्तविक स्वरूप को समझना
  - लोगों ने महसूस किया कि **औपनिवेशिक शासन** भारत के आर्थिक **पिछड़ेपन** का प्रमुख कारण था।
  - अंग्रेज भारतीयों और **भारतीयों** के **हितों** के विरोधी थे।

देश का एकीकरण

- संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप **ब्रिटिश शासन** के अधीन **एकीकृत** था।
- भारतीय प्रांतों पर सीधे तौर पर अंग्रेजों का शासन था, जबकि रियासतों पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन किया गया।
- पूरे देश में एक पेशेवर **सिविल सेवा**, एक **एकीकृत न्यायपालिका** और **संहिताबद्ध नागरिक** और **अपराधिक कानूनों** ने भारत की राजनीतिक एकता का एक नया आयाम प्रदान किया।
- रेलवे, टेलीग्राफ और एकीकृत डाक प्रणाली की शुरूआत ने भौगोलिक दूरियों को कम कर दिया।
- उद्योगों के विकास ने वर्ग हित और **ट्रेड यूनियनों** को जन्म दिया।
- परिवहन और संचार के आधुनिक साधनों ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक साथ ला दिया।

शिक्षा और पश्चिमी विचार

- **पाश्चात्य शिक्षा** ने भारतीय राजनीतिक चिंतन को एक नया आयाम दिया।
- भारतीय राष्ट्रवादियों ने मिल्टन, जॉन स्टुअर्ट मिल, रूसो, पाइन, स्पेंसर और वोल्टेयर जैसे विचारकों के लेखन के साथ तर्कसंगत और उदार विचारों का विकास किया।
- दादाभाई नरोजी और आर.सी.दत्त ने राष्ट्रवाद की आर्थिक आलोचना प्रस्तुत की।
- अंग्रेजी भाषा संचार का माध्यम बन गई, जिससे विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के राष्ट्रवादी नेताओं को अपने विचारों को साझा करने में मदद मिली।
- शिक्षित भारतीयों ने उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड का दौरा किया और उन्हें आधुनिक राजनीतिक संस्थानों के कामकाज की तुलना भारत के साथ करने में मदद मिली और उन्हें उन अधिकारों का एहसास कराया जिनसे उन्हें वंचित रखा जा रहा था।

प्रेस और साहित्य

- उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान समाचार पत्रों (अंग्रेजी और वर्नाक्युलर दोनों) में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई।
- समाचार पत्रों और साहित्य ने लोगों की आकांक्षाओं को आवाज दी और राष्ट्रीय चेतना के प्रसार के साधन बन गए।
- अखबारों ने सरकारी नीतियों की आलोचना की और भारतीयों को विदेशी शासन के असली मकसद से अवगत कराया।
- उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के राष्ट्रवादी नेताओं के बीच राजनीतिक विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में कार्य किया।

स्थानीय साहित्य का विकास

- पश्चिमी शिक्षा ने शिक्षित भारतीयों को स्थानीय साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद के विचार को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रेरित किया।
- राष्ट्रवाद की भावना से सरोबार जनता को ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए प्रेरित करने में सहायक।
- बंकिम चंद्र चटर्जी के आनंद मठ और दीनबंधु मित्रा के नाटक नील दर्पण ने लोगों पर प्रभाव डाला और उनमें ब्रिटिश विरोधी भावनाएं पैदा कीं।
- भारतेन्दु हरीश चंद्र का भारत दुर्दशा (नाटक) ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय जनता की दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

भारत के अतीत की पुनर्खोज

- इंडोलॉजिस्ट ने भारत के अतीत का अध्ययन किया और एक बिल्कुल नई तस्वीर पेश की।
- यूरोपीय विद्वानों के अनुसार, इंडो-आर्यन उसी जातीय समूह के थे जिससे यूरोप के अन्य राष्ट्र विकसित हुए थे। इस अध्ययन ने शिक्षित भारतीयों को मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन दिया।
- भारतीयों में गर्व, स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना फिर से पैदा हुई और इसने राष्ट्रवादियों को औपनिवेशिक मिथकों को ध्वस्त करने में मदद की।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

- इन आंदोलनों ने भारतीय समाज में विभाजन का कारण बनने वाली सामाजिक बुराइयों को दूर करने में मदद की।
- इन आंदोलनों के कारण, समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाया गया, और वे उन कारकों से अवगत हो गए जो भारत के विकास में बाधक थे।

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय

- आधुनिक शिक्षा के विकास, ब्रिटिश प्रशासनिक और आर्थिक नीतियों ने शहरों में एक नए शहरी मध्यम वर्ग को जन्म दिया।
- इस वर्ग ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को औपनिवेशिक स्वामियों के खिलाफ उसके संघर्ष में नेतृत्व प्रदान किया।

सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियां और नस्लीय विरोध

- निम्नलिखित ने श्वेत श्रेष्ठता के मिथक को तोड़ दिया और उपनिवेश विरोधी भावनाओं को जगाने में मदद की।
  - आई.सी.एस. के लिए अधिकतम आयु सीमा 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष (1876) कर दी गयी।
  - जब देश अकाल की चपेट में था तब 1877 का भव्य दिल्ली दरबार ।
  - वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878)।
  - शस्त्र अधिनियम (1878)।
  - इल्बर्ट बिल विवाद
- अंग्रेजों द्वारा किए गए नस्लीय भेदभाव ने राष्ट्रवादी भावनाओं को आहत किया। भारतीयों को दुर्व्यवहार और अपमान का शिकार होना पड़ा और इसने उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ कर दिया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ

संगठन	संस्थापक	उद्देश्य
बंगभाषा प्रकाशिका सभा 1836	**राजा राममोहन राय के सहयोगी**	• प्रेस की स्वतंत्रता • सेवाओं का भारतीयकरण • कानून का संहिताकरण
जमींदारी एसोसिएशन / द लैंडहोल्डर्स सोसाइटी 1838	**द्वारकानाथ टैगोर**	• जमींदारों के हितों की रक्षा
ब्रिटिश इंडिया सोसायटी 1839	विलियम एडम्स	• कंपनी के प्रशासन के निरंकुश चरित्र की ओर ध्यान आकर्षित करना
बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी 1843	जॉर्ज थॉमस	• औपनिवेशिक शासन के तहत लोगों की स्थिति के बारे में जानकारी का संग्रह और प्रसार
ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन 1851	राधा कांत देव	• वर्ग हितों की रक्षा • सरकार को याचिका भेजना • लैंडहोल्डर्स सोसाइटी और बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी के विलय से गठित।
बॉम्बे एसोसिएशन 1852	जगन्नाथ शंकर सेठ	• परिषदों में भारतीयों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन 1866	दादाभाई नरोजी	• भारत के संबंध में इंग्लैंड में जनमत को प्रभावित करना
पूना सार्वजनिक सभा 1867	महादेव गोविंद रानाडे	• सरकार और लोगों के बीच एक पुल के रूप में कार्य किया
इंडियन लीग 1875	शिशिर कुमार घोष	• राजनीतिक शिक्षा
इंडियन एसोसिएशन (जिसे इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता भी कहा जाता है) 1876	सुरेंद्रनाथ बनर्जी और आनंद मोहन बोस	• बंगाल के शिक्षित समुदाय के प्रमुख प्रतिनिधियों का केंद्र। • भारतीय सिविल सेवा परीक्षा के उम्मीदवारों के लिए 1877 में आयु सीमा में कटौती का विरोध किया। • इंग्लैंड और भारत में एक साथ सिविल सेवा परीक्षा आयोजित करने और उच्च प्रशासनिक पदों के भारतीयकरण की मांग की।

		• 1886 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय हो गया
मद्रास महाजन सभा 1884	एम. वीरराघवचारी और बी. सुब्रमण्यम	• स्थानीय संघों की गतिविधियों का समन्वय
बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन 1885	बदरुद्दीन तैयबजी, फिरोजशाह मेहता और के.टी. तेलंग	• लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों के खिलाफ भारतीय जनता को एकजुट किया

कांग्रेस-पूर्व संगठनों के उद्देश्य

- विधान परिषद में भारतीयों को शामिल करना
- सार्वजनिक व्यय में कमी
- उच्च प्रशासनिक पदों का भारतीयकरण
- आर्म्स एक्ट, वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, आदि जैसे कृत्यों का विरोध
- विधान परिषदों का गठन।
- कपास पर आयात शुल्क लगाना
- वृक्षारोपण श्रम के खिलाफ और अंतर्देशीय उत्प्रवास अधिनियम के खिलाफ

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

- 1883 और 1885 में सुरेंद्रनाथ बनर्जी और अन्य द्वारा अखिल भारतीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दो सत्र आयोजित किए गए थे।
- ए.ओ.ह्यूम ने विभिन्न बुद्धिजीवियों और संगठनों को एक अखिल भारतीय संगठन में लामबंद करने में प्रमुख भूमिका निभाई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ए.ओ. ह्यूम 1885 में भारतीय नेताओं के समर्थन से की।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम दादाभाई नौरोजी द्वारा दिया गया।
- कांग्रेस का पहला सत्र दिसंबर 1885 में बॉम्बे के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में आयोजित किया गया था। सत्र में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और इसकी अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की।
- दूसरा सत्र 1886 में कलकत्ता में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने की थी।
- कांग्रेस की बैठक हर साल दिसंबर में देश के अलग-अलग हिस्सों में होती थी। इसमें शुरू में 436 सदस्य थे।

कांग्रेस के निर्माण के पीछे सिद्धांत

पौराणिक सिद्धांत/मानवतावादी सिद्धांत

- ह्यूम ने भारतीयों की दुर्दशा को देखा और वे एक राजनीतिक मंच स्थापित करना चाहते थे जहां से भारतीयों की शिकायतों को सरकार के सामने उठाया जा सके।
- विलियम वेडरबर्न, ए.ओ. ह्यूम की जीवनी लेखक के अनुसार ए.ओ.ह्यूम मानवतावादी दृष्टिकोण में विश्वास करते थे।

यथार्थवादी सिद्धांत / सुरक्षा वाल्व सिद्धांत

- लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल आदि उग्रवादी नेताओं द्वारा दिया गया।
- सिद्धांत के अनुसार कांग्रस लॉर्ड डफरिन और ए. ओ. ह्यूम की साजिश का परिणाम था।
- कांग्रेस की स्थापना का उनका उद्देश्य भारतीयों के बढ़ते असंतोष के खिलाफ अंग्रेजों को एक सुरक्षा वाल्व प्रदान करना था

- इस सिद्धांत की भारतीय राष्ट्रवादियों ने आलोचना की, जो मानते थे कि कांग्रेस राजनीतिक रूप से जागरूक भारतीयों की आकांक्षाओं और प्रयासों का परिणाम है और कोई भी व्यक्ति या समूह इसकी स्थापना के लिए श्रेय का दावा नहीं कर सकता है।

बिपिन चंद्र: "यदि ए.ओ. ह्यूम कांग्रेस को सुरक्षा वाल्व के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे, कांग्रेस के शुरुआती नेताओं ने उन्हें लाइटनिंग कंडक्टर के रूप में इस्तेमाल करने की उम्मीद की थी।

कांग्रेस के उद्देश्य

- जनता के बीच एकता और राष्ट्रीय चेतना की भावना को बढ़ावा देना।
- राजनीतिक रूप से लोगों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करें।
- एक लोकतांत्रिक और राष्ट्रवादी आंदोलन की शुरुआत करना।
- देश के विभिन्न हिस्सों के नेताओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान करें
- उपनिवेशवाद विरोधी विचारधारा को विकसित और प्रचारित करना
- धर्म, जाति या प्रांत के बावजूद भारतीयों के बीच राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित कर्नाक।

उदारवादी चरण (1885-1905)

- नेता: दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, डी.ई. वाचा, डब्ल्यू.सी. बनर्जी, एस.एन. बनर्जी, फिरोजशाह मेहता।
- वे कानून के दायरे में संवैधानिक आंदोलन में विश्वास करते थे।
- नरमपंथियों ने भारत को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में माना और माना कि भारत को अपनी वास्तविक स्वतंत्रता से पहले आधुनिक लोकतांत्रिक तर्ज पर स्व-शासन के लिए तैयार होना होगा।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक ब्रिटिश समिति की स्थापना 1889 में लंदन में हुई थी। इसके अंग का नाम "इंडिया" रखा गया था।
- नरमपंथियों के तरीके
- वे अपनी मांगों को माँगने और पूरा करवाने के लिए शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीकों में विश्वास करते थे।
- अपनी मांगों को रखने के लिए याचिकाओं, बैठकों, प्रस्तावों, पर्चे, ज्ञापन और प्रतिनिधिमंडलों का इस्तेमाल किया।
- हिंसा और टकराव के बजाय धैर्य और मेल-मिलाप में विश्वास रखते थे।
- ब्रिटिश न्याय व्यवस्था में पूर्ण विश्वास ।
- पढ़े-लिखे वर्ग तक ही सीमित ।
- जनता को रोजगार देने की कोशिश नहीं की।
- उनका उद्देश्य केवल ब्रिटिश शासन के तहत राजनीतिक अधिकार और स्वशासन प्राप्त करना था।

नरमपंथियों की प्रमुख मांगें

- विधान परिषदों का विस्तार और सुधार।
- इंग्लैंड और भारत में एक साथ आईसीएस परीक्षा आयोजित करके उच्च पदों पर भारतीयों के लिए अधिक अवसर।
- न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करना।
- स्थानीय निकायों के लिए अधिक शक्तियाँ।
- भू-राजस्व में कमी और अन्यायी जमींदारों से किसानों की सुरक्षा।
- नमक कर और चीनी शुल्क का उन्मूलन, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और संघ बनाने की स्वतंत्रता
- शस्त्र अधिनियम का निरसन
- भारत के अन्य भागों में स्थायी बंदोबस्त की शुरूआत

नरमपंथी राष्ट्रवादियों की उपलब्धियां

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक आलोचना

- दादाभाई नौरोजी, आर.सी. दत्त, दिनशॉ वाचा और अन्य ने लेखन के माध्यम से।
  - दादाभाई नौरोजी: भारत में गरीबी और ब्रिटिश शासन।
  - आर सी दत्त: द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया।
- भारत के ब्रिटिश शोषण की व्याख्या करने के लिए "धन निष्कासन सिद्धांत" प्रतिपादित किया।
- उन्होंने एक आत्मनिर्भर भारतीय अर्थव्यवस्था को एक औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में बदलने और भारतीय अर्थव्यवस्था को अंग्रेजों के अधीन करने का विरोध किया।

संवैधानिक सुधार

- नरमपंथियों ने विधान परिषदों का विस्तार और सुधार करके निर्णय लेने की प्रक्रिया में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने की मांग की।
- 1892 में भारतीय परिषद अधिनियम की कांग्रेस के सत्रों में कड़ी आलोचना की गई क्योंकि इसने भारतीयों को विशेष रूप से वित्तीय मामलों में अधिक शक्ति प्रदान नहीं की और अंतिम निर्णय अंग्रेजों के पास था।
- नरमपंथियों ने निर्वाचित भारतीयों का बहुमत, और बजट पर अधिक नियंत्रण, यानी वोट देने और बजट में संशोधन करने की शक्ति की मांग की। उन्होंने नारा लगाया- "प्रतिनिधित्व के बिना कोई कराधान नहीं"।
- दादाभाई नौरोजी (1904), गोपाल कृष्ण गोखले (1905) और लोकमान्य तिलक (1906) जैसे नेताओं द्वारा कनाडा और ऑस्ट्रेलिया की स्वशासी उपनिवेशों की तर्ज पर भारत के लिए डोमिनियन स्टेटस की मांग।
- हालांकि शुरुआती राष्ट्रवादी. वोट का अधिकार, महिलाओं के राजनीतिक अधिकार आदि जैसी जनता की बुनियादी मांगों को शामिल नहीं करके अपना आधार बढ़ाने में विफल रहे।

सामान्य प्रशासन में सुधार

- मांगें
  - सरकारी सेवा का भारतीयकरण, न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करना, लोक कल्याण पर खर्च में वृद्धि
  - अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में, विदेशों में भारतीय श्रमिकों के लिए बेहतर व्यवहार।

नागरिक अधिकारों की मांग

- राष्ट्रवादियों ने नागरिक अधिकारों की मांग की जैसे: भाषण, विचार, संघ और प्रेस की स्वतंत्रता।
- सरकार ने लोगों के नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के लिए कई कदम उठाए।
- 1897 में तिलक और कई अन्य नेताओं और पत्रकारों की गिरफ्तारी से व्यापक आक्रोश फैल गया।
- इसी तरह, बिना किसी मुकदमे के नाटू भाइयों की गिरफ्तारी और निर्वासन ने सार्वजनिक आक्रोश को आमंत्रित किया।

जनता की भूमिका

- उदारवादी जनता को अपने स्वतंत्रता संग्राम में शामिल करने में विफल रहे।
- उदारवादी चरण के दौरान राजनीति में भागीदारी को कुलीनों का काम माना जाता था क्योंकि प्रारंभिक राष्ट्रवादियों में जनता के राजनितिक विश्वास की कमी थी।

ब्रिटिश सरकार का रवैया

- जैसे ही कांग्रेस ने राजनीतिक भूमिका ग्रहण की (1887 के बाद) सरकार को संदेह हुआ।
- उदारवादी तरीकों और नरमपंथियों द्वारा ब्रिटिश क्राउन के प्रति वफादारी के बावजूद सरकार ने कांग्रेस के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया।
- सरकार ने खुले तौर पर कांग्रेस की निंदा की और राष्ट्रवादियों को "देशद्रोही ब्राह्मण", "वफादार बाबू" आदि कहा।
- डफरिन ने कांग्रेस को "राजद्रोह का एक कारखाना" और "केवल एक सूक्ष्म अल्पसंख्यक लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाला संगठन" करार दिया।
- सरकार ने कांग्रेस के प्रति 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाई।
    - उदाहरण: अधिकारियों द्वारा बनारस के सर सैयद अहमद खान और राजा शिव प्रसाद सिंह को कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए यूनाइटेड इंडियन पैट्रियटिक एसोसिएशन गठित करने को प्रोत्साहित किया गया।
- सरकार ने राष्ट्रवादियों को धर्म के आधार पर और 'कैरेट और स्टिक ' की नीति के माध्यम से विभाजित करने का भी प्रयास किया।

नरमपंथियों की कमजोरियां

- अधिकांश आबादी राजनीतिक संघर्ष से अछूती रही
- उन्होंने औपनिवेशिक शासन की वास्तविक प्रकृति को समझे बिना ताज के प्रति अपनी वफादारी का दावा किया
- कांग्रेस की गतिविधियां एक कुलीन मामला बना रहा।
- विदेशी शासन से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग नहीं की।
- गांधीजी के विपरीत, इन्होने जन आन्दोलन का महत्त्व नही समझा।
- इनके अधिकांश विचार पश्चिमी राजनीतिक सोच से प्रेरित थे जिसने उन्हें लोगों से और दूर कर दिया
- इन सबके बावजूद, प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने बाद के वर्षों के लिए राष्ट्रीय आंदोलन की मजबूत नींव रखी।

नरमपंथियों का मूल्यांकन

- भारत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक मजबूत जनमत बनाकर जनता के बीच राष्ट्रीय भावना को जागृत किया।
- लोकतंत्र, राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्षता और नागरिक स्वतंत्रता जैसे आधुनिक विचारों को लोकप्रिय बनाया।
- औपनिवेशिक शासन के शोषक चरित्र को उजागर किया।
- इस तथ्य को स्थापित किया कि भारतीयों के हित के लिए भारत पर शासन किया जाना चाहिए।
- उनका राजनीतिक कार्य कठोर वास्तविकताओं पर आधारित था, न कि जाति या धर्म जैसी भावनाओं पर।
- उन्होंने पत्र, दलीलों, याचिकाओं, प्रस्तावों, भाषणों और आवेदनों के रूप में आंदोलन के संवैधानिक तरीकों को अपनाया।